संध्या ओ आरती सुमिरन होवे लिरिक्स

संध्या ओ आरती सुमिरन होवे,

दोहा – संध्या सुमिरण आरती,
भजन भरोसे दास,
मनसा वाचा कर्मणा,
होत विघ्न को नास।

संध्या ओ आरती सुमिरन होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।bd।

पहली ओ आरती प्रेम प्रकाशा,
कर्म भर्म का करीया ओ नाशा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।bd।

दुजी ओ आरती दिल आय देवा,
तन-मन-धन से करलो री सेवा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।bd।

तीजी ओ आरती तीर गुण पूजे,
सतगुरु ज्ञान अगोतर पुजे,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।bd।

चौथी ओ आरती चारों जुग पुजा,
गुरु के सम्मान और नहीं दुजा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

पांचवी आरती पद निर्माणा,
केवे कबीरमा सुणो धर्मी दासा,
यह हंसा सत लोक निवासा,
संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।bd।

संध्या ओ आरती सुमिरण होवे,
सुमिरन किया आनन्द फल होवे।bd।

गायक – जगदीश / राजु बेरवा।
चारभुजा साउंड जोरावरपुरा।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com